Title: Need to establish a separate Directorate for Ayurvedic branch of medicine .

डॉ.लक्ष्मीनारायण पाण्डेय (मंदसौर) : सभापति महोदय, सुस्वास्थ्य व रोगोपचार की दृटि से वर्तमान में कई चिकित्सा प्रणालियां कार्यरत हैं। इमें प्राचीनतम पद्धति आयुर्वेद हैं, जो न केवल रोगोपचार की दृटि से अपितु स्वास्थ्य रक्षा की दृटि से भी अतिश्रेठ है।

उक्त पद्धति के आधार पर चिकित्सा सुलभ है, कम खर्चीली है तथा निरापद है। यही कारण है कि इसे न केवल भारत में अपितु भारत के बाहर भी अपनाया जा रहा है। इसमें शोध व अनुसंधान हो रहे हैं। नए-नए प्रयोग सामने आ रहे हैं। जड़ी बूटियों के बारे में विस्तृत अध्ययन किया जा रहा है।

भारत जैसे विशालतम देश के लिए यह चिकित्सा पद्धति एक ऐसी पद्धति है जो हजारों वर्ाों से घर-घर में अपनायी जा रही है तथा करोड़ों की संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। उक्त आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को और अधिक व्यापक व ग्राह्य बनाए जाने की दृटि से पर्याप्त शोध व अनुसंधान आवश्यक है।

अतः मेरा अनुरोध है कि स्वास्थ्य की सजगता के साथ रोग -उपशमन तथा सभी इस निरापद पद्धति को अपनाने हेतु अग्रसर हों, एत्दर्थ एक पृथक आयुर्वेद संचालनालय की स्थापना की आवश्यकता है, जिसको यथाशीघ्र पूरा किया जाए।